sunday pioneer
LUCKNOW SUNDAY | FEBRUARY 16, 2014

Conclave on sugar crops begins

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

The three-day national SugarFest-2014 and International Conclave on Sugar Crops was inaugurated by DDG (Crop Sciences), ICAR, New Delhi, Dr SK Dutta, at the Indian Institute of Sugarcane Research on Saturday.

The spectacular beginning with presentation by female staff of the institute set the tone of the conclave.

While welcoming the chief guest and delegates Director, IISR, and convener of international conference Dr S Solomon said that sugar mills should be essentially converted into sugarcane processing complex to produce sugar, ethanol, baggase, electric-cogeneration (green energy), bio-fertiliser and bio-plastics.

"There is need to intensify research efforts for technological advancement in the areas of green energy production from sugar crops like sugarcane, sugarbeet, palm and sweet corn. This conclave will provide networking opportunity to researchers, processors, industrialists, entrepreneurs, growers and other stakeholders for green energy production," said the Director.

Chief guest Dr SK Dutta while speaking on the occasion said that India and Brazil jointly contributed more that 60 per cent of the world sugarcane and sugar production.

"During last few decades, Brazil has emerged as number one country in ethanol and bio-energy sources. India can utilise Brazilian experiences and technology for harnessing the untapped bio-energy potential of sugar crops specially sugarcane. The vareital development programme must utilise new tool of researches for developing cane varieties having high amount of bio-mass and sugar. In India, public and private sector should work together for popularisation of sugarbeet cultivation and its processing," said Dutta.

Scientist from Brazil Raffaella Rossetto presented Brazilian programme of ethanol production. She said that 40 per cent energy requirement of Brazil came from renewable sources and sugarcane contributed 19 per cent.

"In 1925, the first car was introduced in Brazil which runs on ethanol and gasoline. In 2012, about 80 per cent or more car in Brazil run on blended petrol with 40 per cent ethanol. Brazil is planning to introduce world's first transgenic cane variety to enhance cane productivity by 20 per cent with added advantage of borers and drought tolerant. Presently, Brazil is producing 25 b liters ethanol and exporting about 3.5 b liters," said Raffealla.

In the conclave, 24 foreign delegates from Brazil, Australia, Spain, Vietnam, Sri Lanka, Uganda and about 150 Indian delegates are participating.

The National Sugar Fest 2014 (February 15-17, 2014) also began on Saturday. According to media spokesperson of the institute Dr AK Sah, SugarFest was aimed at showcasing the technological advancements in sugarcane and sugar sector along with the technologies developed at the institute.

In National SugarFest 2014, agri manufactures are showcasing their products through exhibition stalls. IISR is also disseminating information on sugarcane production and processing technologies through exhibitions, business meets, topical lectures and demonstrations. Out of rainbow activities planned for SugarFest, school band in full uniform, fancy dress for kids, balloon blowing, flower arrangement and mehndi for ladies was organised on Saturday in which children, students and women participated with all enthusiasm despite continuous light shower.

It was a delightful experience for delegates specially foreigners to see bullock, horse cart and camel ride and beautiful flower arrangement utilising sugarcane parts and flowers.

In sugar fest, the main attractions for Sunday are cane chewing competition, kite flying, rangoli, innovative food recipe from jaggery and cane juice, quiz, and extempore.

युनाइटेड भारत, लखनऊ, 16 फरवरी 2014

तीन दिवसीय राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का रंगारंग शुभारम्भ

युनाइटेड समाचार सेवा

लखनऊ 15 जनवरी। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में तीन दिवसीय शर्करा महोत्सव व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली के उप महानिदेशक डा स्वपन के दत्ता ने किया। उदघाटन सत्र में संस्थान के महिला कर्मचारियों द्वारा जय हो की धुन पर विभिन्न देशों में गन्ना

परिदृश्य के थीम पर आकर्षक प्रस्तुति ने सभागार में उपस्थित विदेशी व देशी मेहमानों का मन मोह लिया। संस्थान के निदेशक डा सुशील सोलोमन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान के सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र के रूप में विकसित कर दिया जय, जिससे चीनी के साथ इथनॉल, बगास, बिजली, हरित ऊर्जा, जैविक खाद, जैविक प्लास्टिक आदि का उत्पादन हो सके। उन्होने कहा कि शर्करा फसलों जैसे गन्ना, चुकन्दर, खजूर, मीठा मक्का, आदि से हरित ऊर्जा उत्पादन करने के लिए नये शोध किये जाने तथा तकनीक विकसित की जाय, इस दिशा में यह संगोष्ठी हम सबको दिशा-निर्देश व मार्गदर्शन प्रदान करेगा। महोत्सव के मुख्य अतिथि डा दत्ता ने संगोष्ठी में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत और ब्राजील दुनिया का साठ प्रतिशत से अधिक गन्ना व चीनी का उत्पादन करते हैं। उन्होने कहा कि विगत कुछ दशकों में इथनॉल और जैव ऊर्जा के क्षेत्र में ब्राजील नम्बर एक देश बनकर उभरा है। उन्होने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत ब्राजील के अनुभवों का लाभ उठाकर गन्ना में उपलब्ध हरित ऊर्जा की क्षमता का ज्यादा से ज्यादा दोहन कर सके। उन्होने यह भी कहा कि हमें ऐसी प्रजाति विकसित करनी चाहिए जिससे अधिक मात्रा में जैव द्रव्य तथा चीनी प्राप्त हो सके। संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में ब्राजील की रफेला रोसेटो ने इथनॉल एवं जैव उर्जा क्षेत्र में ब्राजील की सफलता पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। रफेला रसेटो ने कहा ब्राजील के कुल उर्जा जरूरत का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय उर्जा स्त्रोत से आता है और गन्ना की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। उन्होने कहा कि आज ब्राजील में लगभग 80 प्रतिशत से ज्यादा कारें 40 प्रतिशत इथनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलती है। भविष्य में वहाँ पेट्रोल में इथनॉल की मात्रा बढ़ाकर 60-70 प्रतिशत तक करने की है। जिससे पेट्रोल एवं डीजल पर निर्भरता कम की जा सके। वर्तमान में ब्राजील लगभग 25 अरब लीटर इथनॉल उत्पादन कर 3.5 अरब लीटर निर्यात करता है। इस अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में ब्राजील, आस्ट्रेलिया, स्पेन, वियतनाम, श्रीलंका, युगांडा, वेल्जियम तथा भारत के लगभग 200 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। यह महोत्सव तीन दिनों तक चलेगा तथा मुख्य शर्करा फसलों के उत्पादन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शन, व्यापार बैठकों, व्याख्यानों तथा प्रदर्शन द्वारा इन फसलों के उत्पादन तथा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के प्रसार का अवसर प्रदान करेगा। आज के आयोजन में छोटे बच्चों हेतु फैन्सी ड्रेस, पूरी युनिफार्म में विद्यालय बैन्ड गुब्बारे फुलाना, पुष्प सजावट तथा मेंहदी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कृषि पर्यटन के अन्तर्गत आयोजित ऊँट, घोड़ा गाड़ी व बैलगाड़ी द्वारा बच्चों, विद्यार्थियों एवं महिलाओं का संस्थान प्रांगण में भ्रमण मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा तथा इसे देखकर विदेशी मेहमान गद्गद हो गये। शर्करा महोत्सव में कलाकारों द्वारा प्रस्तुत पुराने हिन्दी फिल्म गानों का मेहमानों ने लुफ्त उठाया। इस शर्करा महोत्सव में आयोजित कृषि प्रदर्शनी में कृषि निर्माता कम्पनीयों जैसे युनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड, डुपॉन्ट, मॉनसेन्टो, जैन इरिगेशन, महेन्द्रा ट्रैक्टर, फाइनट्रैप, संमॉटो कैमिकल, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, कृभको आदि कम्पनियों ने कृषि उत्पादों पर प्रदर्शन का आयोजन किया। खराब मौसम के बावजूद भी इस महोत्सव में आगन्तुकों ने बढ़कर हिस्सा लिया।

कल्पतरु एक्सप्रेस
लखनऊ, रविवार, 16 फरवरी 2014
9

गोष्ठी

शुरू हुआ तीन दिवसीय किसान-बिज्ञान संगम -2014

वैज्ञानिकों ने दिया हरित ऊर्जा पर जोर

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता ने कहा है कि भारत और ब्राजील दुनिया की 60 प्रतिशत से अधिक गन्ना एवं चीनी उत्पादन करते हैं। पिछले कुछ दशकों में इथनॉल और जैव ऊर्जा के क्षेत्र में ब्राजील नम्बर एक देश बनकर उभरा है। आज आवश्यकता है कि भारत ब्राजील के अनुभवों का लाभ उठाकर गन्ना में उपलब्ध हरित ऊर्जा की क्षमता का ज्यादा से ज्यादा दोहन किया जा सके। हमें ऐसी गन्ना प्रजाति विकसित करनी चाहिए, जिससे अधिक मात्रा में जैव द्रव्य तथा चीनी प्राप्त हो सके। दत्ता भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में तीन दिवसीय शर्करा महोत्सव एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे।

अन्तरराष्ट्रीय किसान विज्ञान कार्यशाला में एकत्र कृषि वैज्ञानिक

शुक्रवार से शुरू हुई इस अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में ब्राजील, आस्ट्रेलिया, स्पेन, वियतनाम, श्रीलंका, युगांडा, बेल्जियम तथा भारत के लगभग 200 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

इस मौके पर ब्राजील की रफेला रोसेटो ने इथनॉल एवं जैव उर्जा क्षेत्र में ब्राजील की सफलता के बारे में एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। रफेला रसेटो ने कहा ब्राजील के कुल ऊर्जा जरूरत का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय ऊर्जा स्रोत से आता है और गन्ना की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। आज ब्राजील में लगभग 80 प्रतिशत से ज्यादा कारें 40 प्रतिशत इथनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलती हैं। भविष्य में वहां पेट्रोल में इथनॉल की मात्रा बढ़ाकर 60-70 प्रतिशत तक करने की तैयारी है, जिससे पेट्रोल एवं डीजल पर निर्भरता कम की जा सके। वर्तमान में ब्राजील लगभग 25 अरब लीटर इथनॉल उत्पादन कर 3.5 अरब लीटर निर्यात करता है।

संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि वर्तमान की सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र के रूप में विकसित कर दिया जाए, जिससे चीनी के साथ इथनॉल, बगास, बिजली (हरित उर्जा), जैविक खाद, जैविक प्लास्टिक इत्यादि का उत्पादन हो सके। शर्करा फसलों जैसे गन्ना, चुकन्दर, खजूर, मीठा मक्का आदि से हरित उर्जा उत्पादन करने के लिए नए प्रयोग करके तकनीक विकसित की जाए।

- आधा दर्जन देशों के साथ भारत के दो सौ विशेषज्ञ हुए शामिल
- ब्राजील में 80 प्रतिशत से अधिक कारों में होता है इथनॉल मिश्रित पेट्रोल का प्रयोग
- इथनॉल और जैव ऊर्जा के क्षेत्र में ब्राजील बना नम्बर वन

खराब मौसम के बावजूद रही रौनक

शुक्रवार से तीन दिवसीय राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव 2014 का शुभारम्भ हुआ, जिसमें मुख्य शर्करा फसलों के उत्पादन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शन, व्यापार बैठकों, व्याख्यानों तथा प्रदर्शन द्वारा इन फसलों के उत्पादन तथा प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के प्रसार के साथ-साथ छोटे बच्चों के लिए फैन्सी ड्रेस, पुष्प सजावट तथा मेंहदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। कृषि पर्यटन के तहत ऊंट, घोड़ा गाड़ी व बैलगाड़ी विदेशी मेहमानों के मुख्य आकर्षण रहे। शर्करा महोत्सव में आयोजित कृषि प्रदर्शनी में कृषि निर्माता कम्पनियों युनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड, डुपॉन्ट, मॉनसेन्टो, जैन इरिगेशन, महिन्द्रा ट्रैक्टर, फाइनट्रैप, संमॉटो कैमिकल, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा विभिन्न कृषि उत्पादों पर प्रदर्शन किया गया।

SUNDAY HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
FEBRUARY 16, 2014

Sugar fest inaugurated

LUCKNOW: The three-day national sugar fest-2014 and the international conclave on sugar crops being organised at Indian Institute of Sugarcane Research (IISR) was inaugurated by Dr SK Dutta, DDG (Crop Sciences), ICAR, New Delhi. Dr S Solomon, director, IISR and convener of the conference, remarked that sugar mills must be converted into sugarcane processing complexes to produce sugar, ethanol, baggase, electric-cogeneration (green energy), bio-fertiliser and bio-plastics. **HTC**

हिन्दुस्तान

राष्ट्रीय शर्करा (शक्कर) महोत्सव में एक से एक मनमोहक कार्यक्रम हुए, स्कूलों के बच्चे भी मेले का लुत्फ उठाने पहुंचे

मासूम से कमिश्नर साहब अड़ गए कि ऊंट पर बैठाओ

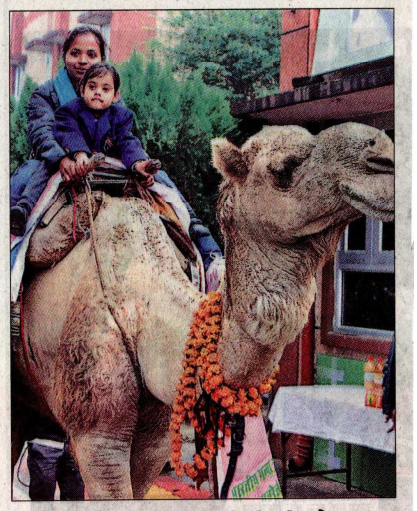

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव में शनिवार को विविधरंगी कार्यक्रम हुए। इसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भी हिस्सा लिया। महोत्सव में लोगों को ऊंट और तांगा की सवारी का भी लुत्फ उठाने का मौका मिला। ● हिन्दुस्तान

लखनऊ | निज संवाददाता

मम्मी तुम भी आओ...ऊंट पर बैठो...बड़ा मजा आ रहा है...बेटा जरा संभल कर...कस कर रस्सी पकड़ना... नहीं तो गिर जाओगे...हां रस्सी पकड़कर बैठा हूं...चलो रश्मि...हम दोनों तांगे की सवारी करते हैं...हां जल्दी पहुंचो वरना बैठने की जगह नहीं मिलेगी...तांगे में पहली बार बैठी हूं कितना अच्छा लग रहा है...मुझे भी...। अरे अंकित वो देखो बैलगाड़ी...चलो उसमें बैठते हैं...भाईया सामने से हट जाओ...बैलगाड़ी आ रही है...बैल सींग मारते हैं।

जी हां, शनिवार को कोई बैलगाड़ी में बैठने का इंतजार कर रहा था...कोई तांगे की सवारी करना चाहता था। उधर

गन्ना संस्थान
शर्करा महोत्सव

छोटे बच्चे ऊंट की सवारी करने के लिए उतावले थे। यह दिलचस्प नजारा किसी दूरदराज गांव का नहीं बल्कि भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का था। राष्ट्रीय स्तर पर शुरू हुए इस रंगारंग कार्यक्रम में कई स्कूलों के बच्चों ने हिस्सा लिया।

पहली बार की ऊंट की सवारी, आया खूब मजा

महोत्सव में शामिल हुए ज्यादातर बच्चे ऐसे थे जिन्होंने पहली बार बैलगाड़ी व ऊंट की सवारी की थी। उनकी खुशी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि तमाम बच्चे देर शाम तक ऊंट पर बैठने के लिए जमे रहे। परिवार के लोगों ने ऊंट और तांगे वाले का बैठाने के लिए कमिश्नर बने बच्चे ने मनुहार भी किया।

पुष्प प्रदर्शनी व मेहंदी प्रतियोगिता में पहुंचीं छात्राएं

महोत्सव में महिलाओं के लिए मेहंदी व पुष्प सजावट प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस दौरान विभिन्न स्कूलों की छात्राओं व महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। फूलों के माध्यम से किसी ने बेटी को बचाने का संदेश दिया तो किसी ने प्रदूषणमुक्त वातावरण बनाने का आह्वान किया। छात्राओं ने अपील की कि बच्चियों की घरों में कद्र की जाए। इस अवसर पर मेहंदी प्रतियोगिता भी हुई। इसमें महिलाओं ने कृषि से जुड़ी तस्वीरों को हाथों पर उकेरा और फसलों की झलक पेश की।

पतंगबाजी व रंगोली प्रतियोगिता आज

रविवार को बच्चों के लिए पतंगबाजी व गन्ना चूसने की प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। कार्यक्रम के संचालक डा. पीके सिंह ने बताया कि इसमें किसी भी उम्र के लोग हिस्सा ले सकते हैं। वहीं विभिन्न आयु वर्ग के लिए दौड़ प्रतियोगिता व महिलाओं के लिए रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

बारिश के बावजूद मेले में रौनक

सुबह से हो रही रिमझिम बारिश से मैदान में बिछाई गई दरी गीली हो गई थी और पंडाल से पानी टपक रहा था। इसके बावजूद मेले में काफी भीड़ थी।

फैन्सी ड्रैस और गुब्बारे फुलाने की प्रतियोगिता में बच्चों ने हिस्सा लिया। फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में शामिल हुए बच्चे इतने मनमोहक लग रहे थे कि लोग तालियों से उनका स्वागत करने लगे। फैन्सी ड्रेस में कोई पुलिस कमिश्नर बना तो कोई चींटी बनकर आया।

समारोह में आए लोगों का उत्साह बढ़ाने के लिए फिल्मी गीत भी बजाए गए। उधर स्कूली बच्चों ने अपने अभिभावकों व अध्यापकों के साथ महोत्सव में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने विशेषज्ञों से कृषि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल की।

चीनी मिलें गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र के रूप में विकसित हों

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शनिवार से शुरू हुए तीन दिवसीय शर्करा महोत्सव एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डा. स्वपन के. दत्ता ने किया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान की सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। जिससे चीनी के साथ इथनॉल, बगास, बिजली (हरित ऊर्जा), जैविक खाद, जैविक प्लास्टिक का उत्पादन हो सके। शर्करा फसलों गन्ना, चुकन्दर, खजूर, मीठा मक्का से हरित उर्जा उत्पादन करने के लिए नये शोध किये जाने चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डा. दत्ता ने संगोष्ठी में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत और ब्राजील दुनिया का 60 प्रतिशत से अधिक गन्ना एवं चीनी उत्पादन करते हैं। संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में ब्राजील की रफेला रोसेटो ने इथनॉल एवं जैव उर्जा क्षेत्र में देश की सफलता पर कहा ब्राजील के कुल उर्जा जरूरत का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय उर्जा स्त्रोत से आता है और गन्ना की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। जिसे बढ़ाकर 60-70 प्रतिशत तक किये जाने पर शोध किया जा रहा है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने बताया कि महोत्सव के पहले दिन शनिवार को छोटे बच्चों के लिए फैन्सी ड्रेस, पूरी यूनिफार्म में विद्यालय बैड गुब्बारे फुलाना, पुष्प सजावट तथा मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कृषि पर्यटन के अन्तर्गत ऊँट, घोड़ा गाड़ी व बैलगाड़ी द्वारा बच्चों, विद्यार्थियों एवं महिलाओं का संस्थान प्रांगण में भ्रमण मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा।

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, रविवार, 16 फरवरी, 2014

गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र बने चीनी मिलें

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) में तीन दिवसीय शर्करा महोत्सव व अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता ने किया। इस अवसर पर डॉ. दत्ता ने कहा कि भारत और ब्राजील दुनिया का 60 प्रतिशत से अधिक गन्ना व चीनी उत्पादन करता है। बीते कुछ दशकों में इथेनॉल और जैव उर्जा के क्षेत्र में ब्राजील पहले नम्बर पर उभरा है। आज जरुरत है कि भारत ब्राजील के अनुभवों का लाभ उठाकर गन्ना में उपलब्ध हरित उर्जा की क्षमता का ज्यादा से ज्यादा दोहन करें। हमें ऐसी गन्ना प्रजाति विकसित करनी चाहिए जिससे अधिक मात्रा में जैव द्रव्य तथा चीनी उत्पादन हो सके।

आइआइएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन का कहना था कि वर्तमान के सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। ताकि चीनी के साथ इथनॉल, बगास, बिजली (हरित उर्जा), जैविक खाद, जैविक प्लास्टिक इत्यादि का उत्पादन हो सके। शर्करा फसलों जैसे गन्ना, चुकन्दर, खजूर, मीठा मक्का इत्यादि से हरित उर्जा उत्पादन करने के लिए नये शोध और तकनीकी विकास पर उन्होने जोर दिया। इस दिशा में यह संगोष्ठी हम सबको दिशा-निर्देश व प्लेटफार्म प्रदान करेगा। संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में ब्राजील से आई वैज्ञानिक रफेला रोसेटो ने इथनॉल एवं जैव उर्जा क्षेत्र में ब्राजील की कामयाबी पर एक शोध पत्र पेश किया। रसेटो ने कहा ब्राजील के कुल उर्जा जरूरत का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय उर्जा स्त्रोत से आता है और गन्ने की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। वर्तमान में ब्राजील में लगभग 80 प्रतिशत से ज्यादा कारें 40 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलती है। भविष्य में वहाँ पेट्रोल में इथेनॉल की मात्रा बढ़ाकर 60-70 प्रतिशत तक करने की है।

गन्ना प्रसंस्करण केंद्र बनें चीनी मिलें : दत्ता

- भारतीय चीनी उद्योग को विदेशियों ने सराहा
- इथेनॉल उत्पादन वृद्धि पर जोर

राब्यू, लखनऊ : चीनी उद्योग में विकास की अपार संभावनाएं जताते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ.स्वप्न के दत्ता ने कहा कि मिलों का विकास गन्ना प्रसंस्करण केंद्र की तरह से किया जाना चाहिए। शनिवार को तीन दिनी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी व शर्करा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए दत्ता ने ब्राजील में गन्ने की बेहतर क्वॉलिटी व चीनी निर्माण विधि से सबक लेने की बात कही। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित गोष्ठी में ब्राजील, श्रीलंका, वियतनाम व ऑस्ट्रेलिया समेत अनेक देशों के गन्ना वैज्ञानिक व शोधकर्ता मौजूद रहे। ब्राजील की रोफेला रोसेटो ने तकनीकी सत्र में इथेनॉल व जैव ऊर्जा के महत्व पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि ब्राजील की कुल ऊर्जा का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय ऊर्जा से प्राप्त होता है। जिसमें गन्ने की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। ब्राजील की 80 प्रतिशत कारें इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलती हैं।

संडे नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ।
16 फरवरी 2014

'गन्ना बन सकता है ऊर्जा का श्रोत'

एनबीटी, लखनऊः चीनी मिलों में गन्ना प्रसंकरण केंद्र खोले जाएं जिससे अक्षय ऊर्जा उत्पादित की जाए। गन्ना प्रसंस्करण केंद्र से चीनी के साथ ही इथनॉयल का उत्पादन होता है। इथनॉयल एक बेहतरीन अक्षय ऊर्जा का श्रोता है। ब्राजील में ऊर्जा की जरूरत पूरी करने के लिए अक्षय ऊर्जा के श्रोतों का इस्तेमाल हो रहा है। इस स्रोत को पैदा करने में 19 प्रतिशत हिस्सेदारी गन्ने की है। यह बातें शनिवार को ब्राजील से आई वैज्ञानिक रफेला रोसेटो ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित शर्करा महोत्सव के पहले दिन आयोजित संगोष्ठी में कही।

रफेला ने बताया कि ब्राजील में 80 प्रतिशत से ज्यादा कारें इथनॉय से चलाई जा रही हैं। पेट्रोल में 40 प्रतिशत इथनॉयल मिलाकर गाड़ियां चलाई जा रही हैं। आने वाले दिनों में वहां पर पेट्रोल में 60 से 70 प्रतिशत इथनॉयल मिलाकर गाड़ियां चलाई जाएंगी। आज के समय ब्राजील लगभग 25 अरब लीटर इथनॉयल उत्पादन कर रहा है जिसमें से 3.5 अरब लीटर वह अन्य देशों में निर्यात कर रहा है। शर्करा महोत्सव में संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि गन्ना प्रसंस्करण केंद्र खुलने से इथनॉयल के साथ जैविक प्लास्टिक का भी उत्पादन हो सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता ने कहा कि भारत और ब्राजील दुनिया का 60 प्रतिशत गन्ना और चीनी उत्पादन करता है। बीते कुछ वर्षों में ब्राजील ने गन्ने की खेती करके जैव ऊर्जा के क्षेत्र में पहला स्थान हासिल कर लिया है। भारत को ब्राजील के अनुभवों का लाभ उठाना होगा। तीन दिवसीय शर्करा महोत्सव के पहले दिन फैंसी ड्रेस, गुब्बारे फुलाने, पुष्प सजावट, मेंहदी प्रतियोगिता आयोजित की गईं।

SUN DAY
अमर उजाला
लखनऊ | रविवार | 16 फरवरी 2014

शर्करा फसलों में ब्राजील से सीखे भारत

राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव-2014 में विशेषज्ञों ने रखी राय

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। शर्करा फसलों के उत्पादन में हम ब्राजील से बहुत कुछ सीख सकते हैं। एथनॉल और जैव ऊर्जा के क्षेत्र में यह अग्रणी देश बन चुका है। सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केंद्र के तौर पर विकसित करके हम भी इस क्षेत्र में नंबर एक हो सकते हैं। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शर्करा महोत्सव और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में हुई चर्चा का कुछ यही निष्कर्ष रहा। उद्घाटन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. स्वप्न के दत्ता ने संस्थान के प्रेक्षागृह में किया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि सभी चीनी मिलों को गन्ना प्रसंस्करण केंद्र के रूप में विकसित करने की जरूरत है ताकि चीनी के साथ एथनॉल, बगास, बिजली (हरित उर्जा), जैविक खाद और जैविक प्लास्टिक का भी उत्पादन हो सके। शर्करा फसलों मसलन गन्ना, चुकंदर, खजूर, मीठी मक्का से हरित उर्जा का उत्पादन करने के लिए नए शोध और तकनीक विकसित करने पर भी उन्होंने जोर दिया। मुख्य अतिथि डॉ. दत्ता ने कहा कि भारत और ब्राजील दुनिया का 60 प्रतिशत से अधिक गन्ना एवं चीनी उत्पादन करते हैं। विगत कुछ दशकों में एथनॉल और जैव उर्जा के क्षेत्र में ब्राजील नंबर एक देश बनकर उभरा है। भारत ब्राजील के अनुभवों का लाभ उठाकर गन्ना में उपलब्ध हरित उर्जा की क्षमता का ज्यादा से ज्यादा दोहन कर सकता है। हमें ऐसी गन्ना प्रजाति विकसित करनी चाहिए जिससे अधिक मात्रा में जैव द्रव्य और चीनी मिल सके। संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में ब्राजील की रफेला रोसेटो ने एथनॉल और जैव उर्जा क्षेत्र में ब्राजील की सफलता पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। रसेटो ने कहा, ब्राजील की उर्जा जरूरत का 40 प्रतिशत हिस्सा अक्षय उर्जा स्रोत से आता है और इसमें गन्ना की हिस्सेदारी 19 प्रतिशत है। ब्राजील में 80 प्रतिशत से ज्यादा कारें 40 प्रतिशत एथनॉल मिश्रित पेट्रोल से चलती हैं। भविष्य में वहां पेट्रोल में इसकी मात्रा बढ़ाकर 60-70 प्रतिशत करने की योजना है। इससे पेट्रोल और डीजल पर निर्भरता कम हो सकेगी। ब्राजील में लगभग 25 अरब लीटर एथनॉल का उत्पादन होता है, जिसमें से 3.5 अरब लीटर निर्यात किया जाता है।

ब्राजील में होता है 25 अरब लीटर एथनॉल का उत्पादन

बैलगाड़ी से घूमे विदेशी मेहमान

शनिवार को शुरू हुआ राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव तीन दिनों तक चलेगा। पहले दिन छोटे बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस, पूरी यूनिफॉर्म में विद्यालय, बैंड गुब्बारे फुलाना, पुष्प सजावट और मेहंदी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। ऊंट, घोड़ा गाड़ी और बैलगाड़ी से संस्थान भ्रमण भी मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा। विदेशी मेहमानों ने इसका खूब लुत्फ उठाया। इस कार्यक्रम में ब्राजील, आस्ट्रेलिया, स्पेन, वियतनाम, श्रीलंका, युगांडा, बेल्जियम और भारत के लगभग 200 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।